

अराजक-पूँजीवाद

स्रोत: द हट्टि

अर्जेंटीना में राष्ट्रपतिपद के चुनाव में स्व-घोषित अराजक-पूँजीवादी **जेवियर माइली** की जीत के साथ "अराजक-पूँजीवाद" (Anarcho-Capitalism) शब्द/पद हाल ही में चर्चा का विषय बन गया है।

- यह राजनीतिक दर्शन (अराजक-पूँजीवाद) राज्य के उन्मूलन का समर्थन करता है साथ ही यह प्रस्तावित करता है कि निजी कंपनियों मुक्त बाज़ार में कानून व व्यवस्था का प्रबंधन करती हैं।

अराजक-पूँजीवाद क्या है?

■ परिचय:

- अराजक-पूँजीवाद, राजनीतिक दर्शन तथा राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांत है जो राज्य के स्थान पर बाज़ार द्वारा व्यापक रूप से बनिविमति समाज में वस्तुओं एवं सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान की वकालत करता है।
- **मरी रोथबर्ड**, अराजक-पूँजीवाद का प्रणेता था, जो वर्ष 1950 के दशक के अमेरिकी स्वतंत्रतावादी आंदोलन का एक प्रमुख नेता था।
- अराजक-पूँजीपति इस बात पर जोर देते हैं कि मुक्त बाज़ार में निजी कंपनियों कुशलतापूर्वक पुलसिगि एवं अधिक सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम हैं।
- दर्शन का तर्क है कि बेहतर उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने वाले निजी कर्षेत्रों के समान, निजी पुलसिगि और कानूनी प्रणालियाँ राज्य-एकाधिकार वाले समकक्षों से बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं।
 - अराजक-पूँजीवादी समाज में, व्यक्ति सुरक्षा और विवाद समाधान के लिये निजी पुलसि तथा अदालतों को भुगतान करते हैं।
 - ग्राहक संरक्षण द्वारा संचालित निजी कंपनियों को अधिक जवाबदेह माना जाता है, क्योंकि असंतुष्ट ग्राहक प्रतिसिपर्धी सेवाओं को बदलते रहते हैं।
- अराजक-पूँजीपति प्रतिसिपर्धी बाज़ारों की वकालत करते हैं, यह दावा करते हुए कि वैश्वीय सतरीय और लागत प्रभावी पुलसि तथा कानूनी सेवाओं की गारंटी देते हैं। यह राज्य-वर्तित पोषित प्रणालियों के विपरीत है, जो ग्राहकों को उनकी प्राथमिकताओं और ज़रूरतों के अनुरूप सेवाओं का चयन करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

■ चिंताएँ:

- एक ही कर्षेत्र में पुलसि और न्यायपालिका सेवाएँ प्रदान करने वाली कई निजी कंपनियों सशस्त्र संघर्ष तथा अराजकता का कारण बन सकती हैं।
- अमीरों के पक्ष में बाज़ार-आधारित प्रणाली के बारे में संदेह पैदा होता है, जो उन्हें निजी कंपनियों को अधिक भुगतान करके न्याय से बचने की अनुमति देता है।
 - ऐसी आशंकाएँ मौजूद हैं कि लाभ-संचालित प्रणाली गरीबों को हाशिये पर धकेल सकती हैं, जिससे न्याय तक उनकी पहुँच सीमित हो सकती है।
- आलोचकों को चिंता है कि एक केंद्रीकृत प्राधिकरण के बिना, निजी कंपनियों वित्तीय हतियों के आधार पर न्याय को प्रभावित करने वाली व्यापक जनता के प्रतिसिर्वाबदेह नहीं हो सकती हैं और संभावित रूप से न्याय की अखंडता से समझौता कर सकती हैं।
- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण की अनुपस्थिति से सतर्कता का खतरा बढ़ सकता है, जहाँ व्यक्ति या समूह कानून को अपने हाथ में लेते हैं।
 - अराजक-पूँजीवाद प्रीमियम सेवाएँ वहन कर सकने वाले लोगों के लिये बेहतर कानूनी सुरक्षा प्रदान करने वाली सामाजिक असमानताओं को खराब कर सकता है।
- एक मानकीकृत कानूनी ढाँचे की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप न्याय के मानक अलग-अलग हो सकते हैं, जिससे कानूनी परिणामों में अनिश्चितता और असंगतता पैदा हो सकती है।

■ चिंताओं पर अराजक-पूँजीवादी प्रतिक्रियाएँ:

- निजी कंपनियों का लक्ष्य सभी के लिये नष्पिपक्ष और सुलभ न्याय सुनिश्चित करते हुए बड़े बाज़ार को संतुष्ट करना होगा, न कि केवल अमीरों को।
- प्रतिसिपर्धी बाज़ार में, निजी कंपनियों ग्राहक संरक्षण पर नरिभर रहती हैं, जो उन्हें जनता के प्रतिसिर्वाबदेह और उनकी ज़रूरतों के प्रतिसिर्वाबदेह बनाती हैं।
 - निजी कंपनियों नचिले स्तर पर मांग को पूरा करने का प्रयास कर सकती हैं, जिससे संभवतः गरीबों के लिये न्याय की बेहतर संभावनाएँ उपलब्ध होंगी।

